Class-X

Hindi-B (085)

खंड-अ

1(i)(a) मानव डीएनए की

(ii)(a) रोचक और विचारणीय

(iii)(b) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है

(iv)(d) चाँद पर

(v)(d) परमाणु हथियार के प्रयोग से होने वाले दुष्प्रभाव रोकना

2(i)(b) इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का सीमित उपयोग करना चाहिए।

(ii)(c) ~~गै जेट्र~~ गैजेट्स को अपनी हैसियत से जोड़ना

(iii)(d) (ख), (ग) और (घ)

(iv)(c) संपन्नता का दिखावा

(v)(d) उपर्युक्त तीनों पर बिताया गया समय

3(i) (a) संज्ञा पदबंध

(ii) (b) केवल (ख)

(iii) (d) उतर चुका है

(iv) (c) विशेषण पदबंध

(v) (b) सर्वनाम पदबंध

4(i) (c) मिश्र वाक्य

(ii) (c) जब मैं प्रातः काल नाश्ता कर लेता तब पढ़ने बैठ जाता हूँ।

(iii) (a) वाक्य संरचना की दृष्टि से वाक्य के मुख्य तीन भेद होते हैं।

(iv) (a) उन्होंने डोर पकड़ ली और हॉस्टल की तरफ दौड़े।

(v) (b) सरल वाक्य

5(i)(d) बहुव्रीहि समास

(ii)(c) तत्पुरुष समास

(iii)(c) देह का अवसान

(iv)(b) चक्रपाणि

(v)(a) दुःख रुपी ताप - कर्मधारय समास

6(i)(a) बहुत बुरा लगना

(ii)(c) (ग) और (घ)

(iii)(b) आँखों में धूल झोंकना

(iv)(d) आड़े हाथों लेना

(v)(d) तूती बोलना

(vi) (d) दाँतों पसीना आना

7 (i) (a) देश की सुरक्षा की

(ii) (b) केवल (ग)

(iii) (d) देश की रक्षा हेतु तत्पर सैनिकों के काफ़िले को

(iv) (a) देश की रक्षा हेतु कुर्बान होते सैनिकों के लिए

(v) (b) मातृभूमि की रक्षा ~~हेतु~~ हेतु बलिदान की राह

8 (i) (d) अत्याचारी का अंत एक न एक दिन अवश्यसंभवी है

(ii) (c) (ग) और (घ)

9 (i) (a) पुलिस प्रशासन

(ii) (b) स्वतंत्रता दिवस की वर्षगाँठ मनाना

(iii) (a) ट्रैफ़िक पुलिस गश्त के काम में लगी थी।

(iv) (b) सरकारी आदेशानुसार कर्तव्य का निर्वाह करने के लिए

(v) (d) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

10 (i) (a) आत्म संतुष्टि के सुख की कामना

(ii) (d) हमें अतीत और भविष्य की चिंता त्याग कर वर्तमान में जीना चाहिए।

खण्ड ब

11 (क) 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में लेखक की माँ उन्हें सूरज छिपने के बाद पेड़ों से पत्ते तोड़ने से मना करती थी। उनका मानना था कि ~~ऐसा करने से~~ पत्ते तोड़ने से पेड़ों का दुख होगा। उनकी माँ उन्हें संध्या के समय फूलों को तोड़ने से मना करती थी। उनका कहना था कि

ऐसा करने से फूल रोते हुए बद्दुआ देते हैं। उनकी माँ उन्हें दरिया पर जाने पर उसको सलाम करने को कहती थी। वे उन्हें कबूतरों और मुर्गों को सताने से मना करती थी। लेखक के मकान के रोशनदान में कबूतर के एक जोड़े ने दो अंडे दिए हुए थे। उनमें से एक को बिल्ली ने उचककर तोड़ दिया और दूसरा सँभाल कर रखते हुए माँ के हाथ से टूट गया। वह बहुत दुखी हुई और उन्होंने दिन भर का रोज़ा रखा। लेखक की माँ उन्हें प्रकृति का ख्याल रखने के लिए इसलिए कहती थी क्योंकि हम सभी जीव-जंतु इसी प्रकृति के कारण जीवित हैं। पेड़ हमें खाना, रहने के लिए स्थान आदि प्रदान करते हैं। अगर हम प्रकृति का ख्याल नहीं रखेंगे तो प्रदूषण, रोग, गरमी आदि बढ़ जाएँगे जो हमारे लिए हानिकारक हैं।

वे लेखक को प्रकृति का ख्याल रखने के लिए इसलिए कहती थी ताकि वे उन्हें संवेदनशील, भावुक, दयालु, परोपकारी बना सकें। वे उन्हें प्रकृति की इज़्ज़त करना सिखाना चाहती थी। वे चाहती थी कि लेखक प्रकृति के प्रति सहानुभूति रखे। इन्हीं जीवन मूल्यों का विकास करने के लिए वे लेखक को प्रकृति का ख्याल रखने को कहती थी।

(ख) गाँववालों और वामीरो की माँ द्वारा अपमानित होने के बाद तताँरा के क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। क्रोध में ही उसने अपनी तलवार निकाली और पूरी शक्ति से उसे धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से उसे खींचने लगा जिससे धरती में सीधी दरार आ गई और धरती दो टुकड़ों में विभाजित हो गई।

मैं अपने निजी जीवन में क्रोध का शमन करने के लिए निम्नलिखित कार्य करती हूँ :-

→ एक लंबी साँस लेती हूँ और थोड़ा पानी पीती हूँ।
→ दिमाग को शांत रखने की कोशिश करती हूँ और ~~ठंडे~~ ठंडे दिमाग से सोचने का प्रयत्न करती हूँ और विचार करती हूँ कि गुस्सा आने का मुख्य कारण क्या था।
→ प्रकृति की गोद में शरण लेती हूँ और दिमाग शांत करने के लिए पक्षियों की चहचहाहट के ~~मधुर~~ मधुर संगीत को सुनती हूँ।
→ अपने माँ - बाप या किसी बड़े से सलाह लेने की ~~कोशिश~~ कोशिश करती हूँ।
→ थोड़ी देर के लिए अपनी मनपसंद पुस्तक पढ़ती हूँ ताकि क्रोध शांत हो जाए।

12क संसार में स्वार्थी लोग ही सुखी हैं और दूसरों की चिंता करनेवाले दुखी हैं। सोना अज्ञान और अकर्मण्यता का प्रतीक है और जागना सतत कर्म करते रहने का। सोना और जागना का प्रयोग प्रतीकार्थ किया गया है। केवल अपने लिए ही सोचनेवाले लोग मानों दूसरों के दुख दर्द के प्रति उदासीन हैं सोए हुए के समान हैं इसके विपरीत दूसरों के दुख दर्द के प्रति जागरूक व्यक्ति मानो सचेत है जागा हुआ है। कवि ने यही समझाने के लिए सोना और जागना शब्द का प्रयोग किया है। कबीर संसार के लोगों के स्वार्थ और अज्ञान को देखकर दुखी हैं। संसार के लोग भोग-विलास में लिप्त हैं और सोने और खाने को सच्चा सुख मानते हैं। संसार के लोग बहुत स्वार्थी हैं और पशु के समान केवल अपने बारे में सोचते हैं। वे सोने और खाने में व्यस्त हैं और ईश्वर की सच्चाई से अनजान हैं। कबीर दिन-रात इस संसार के दुखों से दुखी होकर जागते रहते हैं। ~~वे ई~~ कबीर ईश्वर को पाने के लिए ~~लिए~~ दिन रात जागते हैं और कबीर बहुत दुखी और अधीर हैं। ~~कबीर ई~~ कबीर ईश्वर को पाने के लिए विचलित हैं। हाँ जागना भी दुख का कारण हो सकता है। जब हम ~~बहुत~~ बहुत दुखी होते हैं तब हम सिर्फ़ उस पीड़ा को दूर करने के बारे में सोचते हैं और दिन-रात इसी विचार में लगे रहते हैं। हम सोना और

खाना दोनों भूल जाते हैं। जब तक वह दुख दूर न हो जाए हम विश्राम नहीं कर सकते इसलिए जागना दुख का कारण हो सकता है।

ख कवि के अनुसार वह मृत्यु सुमृत्यु है जो मानवता की राह में तथा लोकहित कार्यों में परोपकार करते हुए प्राप्त होती है जिसके पश्चात भी मनुष्य को संसार में याद रखा जाता है। कवि कहते हैं कि मनुष्य नश्वर है अर्थात एक दिन उनकी मृत्यु निश्चित है। इसलिए कवि कहते हैं कि हमें अपना जीवन परोपकार में लगा देना चाहिए। जो मनुष्य स्वार्थी होता है, उसकी सुमृत्यु नहीं होती। कवि कहते हैं कि हमें अपने लिए नहीं जीना चाहिए क्योंकि अपने लिए तो पशु भी जीते हैं। जो व्यक्ति परोपकारी होता है, वह मरकर भी कभी नहीं मरता। परोपकारी व्यक्तियों का बखान पुस्तकों में होता है, उन्हें संपूर्ण सृष्टि पूजती है, उनके बारे में हमेशा एक अमर व्यक्ति की भाँति बात की जाती है। नश्वर शरीर से मोह रखना व्यर्थ है, परोपकार करना ही सच्चा धर्म है और हमें यही करना चाहिए। परोपकारी व्यक्ति मरकर भी कभी नहीं मरते जैसे कर्ण, दधीचि आदि जिन्होंने लोक कल्याण के लिए अपना जीवन त्याग दिया था।

13 ख. पी.टी मास्टर प्रीतमचंद बहुत कड़क इनसान थे। उन्हें किसी ने न तो कभी हँसते देखा न किसी की प्रशंसा करते हुए। सभी छात्र उनसे भयभीत रहते थे। वे बच्चों को मार-मारकर उनकी चमड़ी ? उधेड़ देते हैं। छोटे-छोटे बच्चे अगर थोड़ा सा भी अनुशासन भंग करते तो वे उन्हें कठोर से कठोर सज़ा देते थे। पी.टी साहब प्रीतमचंद चौथी ~~कक्षा~~ कक्षा को फ़ारसी भी पढ़ाते थे। एक बार ~~बच्चे उनके द्वारा दिया गया शब्द रुप रटकर नहीं आए। इस~~ बच्चों ने उनके द्वारा दिया गया शब्द रुप नहीं रटा। इस पर उन्होंने बच्चों की पीठ ऊँची करके बड़ी ~~क्रूरतापूर्ण क्रूरतापूर्ण~~ क्रूरतापूर्ण ढंग से मुर्गा बनने का आदेश दिया तब ~~व~~ वहाँ हेडमास्टर आ गए। हेडमास्टर साहब यह दृश्य देखकर उत्तेजित हो उठे और उन्होंने ~~पी.टी~~ पी.टी साहब को मुअत्तल कर दिया। हाँ मास्टर प्रीतम चंद को मुअत्तल करना उचित था क्योंकि उन जैसे अध्यापकों के वजह से बच्चों के मन में स्कूल का भय बढ़ जाता है। वे स्कूल को एक भयानक और नीरस जगह के रुप में देखने लगते हैं और उनकी पढ़ाई में धीरे-धीरे रुचि खत्म होने लगती हैं ~~जि~~ जिनसे उनका भविष्य घोर अंधकार में डूब जाता है। प्रीतमचंद जैसे अध्यापकों के वजह से बच्चे दूसरे अध्यापकों से भी डरने लगते हैं और उनसे खुलकर बात नहीं कर सकते। प्रीतमचंद जैसे लोगों के

वजह से बच्चों का बचपन तिरोहित हो जाता है और उनका स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है इसलिए मास्टर प्रीतमचंद को मुअत्तल करना उचित है।

ग टोपी शुक्ला बहुत ज़हीन था किंतु वह नौवीं कक्षा में दो साल अनुत्तीर्ण हो गया था। पहले साल वह फ़ेल हो गया क्योंकि उसके घर के लोग उससे अपना काम करवाते थे जिससे उसे पढ़ने का समय नहीं मिलता था। दूसरी साल उसे टाइफाइड हो गया इसलिए वह पास नहीं हो पाया। दो साल एक ही कक्षा में रहने के कारण टोपी को बहुत सारी तकलीफ़ें झेलनी पड़ी जैसे -

→ वह अकेला पड़ गया क्योंकि उसके दोस्त दसवीं में पहुँच गए थे।

→ वह शर्म के मारे किसी को अपनी दिल की बात नहीं कह पाता था।

→ उसके सहपाठी उसका मज़ाक उड़ाते थे।

→ अध्यापक उसे अपमानित करते थे और कमज़ोर लड़कों को उसका उदाहरण देकर समझाते थे।

टोपी के तकलीफ़ों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में ये सुधार लाने चाहिए :-

→ किसी भी छात्र को एक कक्षा में दो बार नहीं बिठाना चाहिए। दूसरी बार उन्हें पास कर देना चाहिए।
→ जिस विषय में वे कमज़ोर हों, उन्हें उससे हटा देना चाहिए।
→ छात्र को ग्रेड के अनुसार पास कर देना चाहिए न कि अंक के अनुसार।
→ अध्यापकों को कह देना चाहिए कि वे बच्चों को अप को अपमानित न करें बल्कि उनका हौंसला आत्मबल बढ़ाएँ।

14 (ग) बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ

'बेटी' भगवान का एक ऐसा उपहार है जो सिर्फ़ कुछ ही लोगों को प्राप्त होती है। बेटी भगवान का वरदान है। भारत में स्थिति इसके विपरीत है। भारत में कई स्थानों में म माता-पिता बेटों को चाहते हैं इसलिए वे बेटियों को माँ की कोख में ही मार देते हैं। ऐसा करने की वजह से भारत में कई स्थानों में लड़कियों की कमी है। 1000 लड़कों के लिए सिर्फ़ 919 लड़कियाँ हैं। कुछ लोग भूल जाते हैं कि बेटी बेटे के बराबर है। बेटी वह सब कुछ कर सकती है जो एक बेटा कर सकता है। अगर हम बेटी को शिक्षित करते हैं तो पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। बेटी के बिना समाज का विकास नहीं हो सकता। वर्तमान समय

में बेटी बचाने की आवश्यकता है क्योंकि लड़कियों की संख्या लगातार कम होते जा रही है जिससे समाज पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। भारतीय समाज पर इसका भयंकर प्रभाव है। भारत में कई स्थानों में लड़कियों को शिक्षित नहीं किया जाता और बाल्यावस्था में ही उन्हें ~~शादी के~~ विवाह के बंधन में बाँध दिया जाता है जिससे उनका जीवन रसोईघर तक सीमित रह जाता है। हरियाणा, राजस्थान जैसे राज्यों में लड़कियाँ तो न के बराबर हैं। लड़कियों को पढ़ाने ~~और~~ के लिए काफ़ी आयोजन किए गए हैं किंतु इसके मार्ग में काफ़ी ~~बाधा~~ बाधाएँ हैं - लोग अभी भी लकीर के फ़कीर बने हुए हैं और केवल लड़का चाहते हैं, वे लड़कियों की शिक्षा को व्यर्थ समझते हैं, वे लड़कियों को बोझ समझते हैं। बेटियों को बचाने के लिए काफ़ी सुझाव हैं जैसे - लोगों में जागरूकता बढ़ाना, जन्म से पहले बच्चों का लिंग न बताना, लड़कियों के लिए स्कूल खोलना, लड़कियों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना आदि। लड़कियों को राजनेता बनाकर भी लड़कियों की स्थिति सुधारी जा सकती है। लड़कियों को शिक्षित करना सबसे आवश्यक है।

15 ख गोपाल निवास
अ ब स नगर,

दिनांक : 17.03.2023

सेवा में
नगर निगम आयुक्त
नगर नि॰ निगम
अ ब स नगर।

विषय: सुंदर पार्क बनाने के लिए धन्यवाद करने हेतु

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आद्या विश्वकर्मा अ ब स नगर की निवासी हूँ। मैं आपको यह पत्र सुंदर पार्क ~~बा~~ बनाने के लिए धन्यवाद करने हेतु लिख रही हूँ।

हमारे क्षेत्र का पार्क अब तक कूड़ेदान की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। कूड़े ~~की~~ का ढेर ~~हमेशा~~ पार्क में हमेशा पड़ा रहता था। इससे पूरे क्षेत्र में ~~बे~~ बदबू आती थी। बच्चे पार्क

में खेल नहीं पाते थे। बड़े-बुज़ुर्ग शाम को पार्क में टहल भी नहीं पाते थे। मच्छर, चूहे, कीड़े आदि पार्क में घूमते रहते थे जिससे क्षेत्र में जानलेवा रोग फैल रहे थे। बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो रहा था। कुछ बच्चों को अस्पताल में भर्ती किया गया। किंतु इस पार्क की स्थिति बदलने के लिए नगर निगम ने सहयोग किया और कड़ी मेहनत से इस पार्क की स्थिति बदल दी। अब यहाँ बच्चे खेल सकते हैं और शाम को यहाँ लोग टहल सकते हैं। यह पार्क अब सुंदर बुना बन गया है और इसमें बहुत सारे पेड़-पौधे लगाए गए हैं। यह पार्क हमारा क्षेत्र अब इस पार्क के कारण पहचाना जाता है।

मैं आपको धन्यवाद करना चाहती हूँ कि आपने हमारी हमारे आग्रह को ध्यान में रखते हुए इस पार्क को सुंदर बना दिया जिससे हमारी काफ़ी मदद हुई है।

धन्यवाद!
भवदीय
आद्या विश्वकर्मा

16 क

सर्वोदय विद्यालय

सूचना

कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला हेतु

दिनांक- 17.03.2023

हमारे विद्यालय में कक्षा 8-10 के छात्रों को कैरियर चुनने में मदद करने के लिए 19.03.2023 को कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला आयोजित की जा रही है। सभी छात्र इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित हैं। छात्र अपने सवाल कार्यक्रम के अंत में शिक्षकों से पूछ सकते हैं।

श्यामा

सचिव- छात्र परिषद्

ख

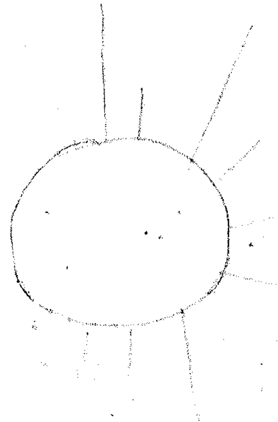

निशांतरश्मि सोलर हीटर

सोलर हीटर से भर दे अपनी ज़िंदगी में उजाला !!

पानी गरम करना, खाना बनाने के लिए उपयोग करें !!

न फैलाएँ ये वातावरण में प्रदूषण !!

न करें पर्यावरण को दूषित !!

सिर्फ़ ₹5000

21·03·2023 तक प 50% छूट !!

दूसरे हीटर से काफ़ी अच्छा चलें !!

सालों-साल तक काम करें !!

संपर्क करें - 9998887766

18 ख From: maanvi@gmail.com

To: bajajelectronics@gmail.com

CC:

BCC:

विषय: टेलीविज़न के लिए विस्तारित आश्वासन हेतु

महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं मानवी, ने मैंने आपके ऑन दुकान से ऑनलाइन टेलीविज़न खरीदा है। उसके साथ मुझे यह टेलीविज़न बजाज कंपनी का है और ₹70,000 का है। यह मैंने 17.03.2023 को मँगवाया था और मुझे यह 21.03.2023 को मिला। इस टेलीविज़न के साथ मुझे 3 साल का आश्वासन मिला। जब मैंने अपने कुछ मित्रों से बात की तो उन्होंने मुझे बताया कि यह आश्वासन बढ़ाया जा सकता है। मैं आपको यह ई-मेल लिख रही हूँ ताकि मुझे पता चल

सके कि क्या मेरे टी.वी पर भी आश्वासन बढ़ाया जा सकता है ? अगर हाँ तो मुझे यह जानना है कि यह आश्वासन कितने सालों तक बढ़ाया जा सकता है, विस्तारित आश्वासन के लिए मुझे कितने पैसे खर्च करने पड़ेगे। यह विस्तारित आश्वासन मुझे टी.वी के किन हिस्सों के लिए मिल सकता है। मुझे यह भी जानना है कि क्या विस्तारित आश्वासन के लिए मुझे आपके दुकान पर आना पड़ेगा या यह ऑनलाइन में भी पूरी की जा सकती है। आशा करती हूँ कि आप मेरे सवालों के जवाब देते हुए जल्द से जल्द ई-मेल अवश्य लिखेंगे।

धन्यवाद !
भवदीय
मानवी
दिनांक - 17.03.2023